Paper - III

MT

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - I - PAPER - III

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. **(क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **चौखट पूर्ण कीजिए ।** **1**

ii) **वर्तुल में सही उत्तर लिखिए।**

(1) **घमंडी अभिनेत्री के व्यंग्य का तात्पर्य** → वेल्स लेखक नहीं हैं । **½**

(2) **लेखक वेल्स के व्यंग्य का तात्पर्य** → अभिनेत्री अनपढ़ है **½**

2) i) **उत्तर लिखिए।**

(1) लेखक श्री. पद्मसिंह शर्मा **½**

(2) कवि श्री. जगन्नाथदास रत्नाकर **½**

ii) **चौखट पूर्ण कीजिए।** **1**

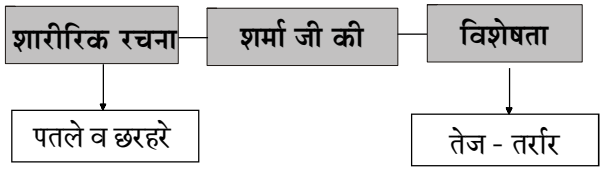

3) i) **समानार्थी शब्द लिखिए।** **1**

(1) चिट्ठी - पत्र

(2) घमंडी - अहंकारी

ii) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) सम्बंध - संबंध ½

(2) वैद्य - वैद्य ½

4) देखा जाए तो व्यंग्य करना बुरी बात है । कभी-कभी हमारे मित्र या संबंधी सभी के सामने हम पर तीखे प्रहार करते हैं और हमारा मजाक भी उड़ाते हैं। ऐसे वक्त हम भी उन पर तीखे प्रहार करेंगे तो झगड़ा हो जाएगा । अत: यदि हम बोलने की कला में निपुण हैं तो हम व्यंग्यपरक शब्दों का सहारा लेकर उन पर व्यंग्यबाण चला सकते हैं । ऐसा करने से गंभीर बना माहौल प्रसन्नता से भर उठेगा और सभी को हँसने का मौका भी मिल जाएगा । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **चौखट पूर्ण कीजिए।** **1**

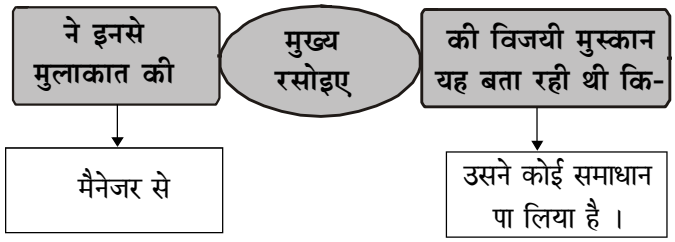

ii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) वर्तन माँजने वाली का क्या नाम था ? ½

(2) होटल मालिक का संपर्क किससे है ? ½

2) i) **उत्तर लिखिए।**

(1) होटल मालिक के । ½

(2) मैनेजर का । ½

ii) **सत्य / असत्य पहचान कर लिखिए।**

(1) असत्य ½

(2) असत्य ½

3) i) **परिच्छेद में आए अंग्रेजी शब्दों के हिंदी शब्द लिखिए।**

(1) मैनेजर - प्रबंधक ½

(2) मिटिंग - अधिवेशन ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।**

(1) चिंतित × निश्चिंत ½

(2) अप्रसन्न × प्रसन्न ½

4) सभी का अपना महत्त्व होता है। कौन कब किस मुश्किल की घड़ी में हमारी सहायता करेगा, यह जानना सचमुच कठिन है। व्यक्ति चाहे संपन्न हो या दीन, समाज में सभी का अपना स्थान एवं महत्त्व होता है। जहाँ तलवार काम नहीं आ सकती है, वहाँ सुई काम आ जाती है। उसी प्रकार समाज का अभावग्रस्त वर्ग संपन्न वर्ग की हर प्रकार से सेवा कर उसे प्रसन्न रखने का प्रयास करता है। निम्न दर्जे के सारे काम समाज का अभावग्रस्त वर्ग ही पूर्ण करता है। अत: संपन्न वर्ग का यह कर्तव्य है कि वह उनका खयाल रखें। **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) समझकर लिखिए। **1**

i) उत्पादक और उपभोक्ता ।

2) उत्तर लिखिए। **1**

i) व्यापारिक (ii) नियुक्ति संबंधी (iii) शैक्षिक
(iv) धार्मिक (v) मनोरंजन संबंधी

3) विज्ञापन की दुनिया काफी मायावी है। बाजारीकरण के मौजूदा दौर में विज्ञापनों का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आज उत्पादक किसी भी तरह से अपने उत्पाद को बाज़ार में बेचना चाहता है और इसके लिए वह विज्ञापनों का सहारा लेकर अपने उत्पाद के लिए उपभोक्ताओं को पैदा करता है। यदि विज्ञापन में उत्पाद की सही जानकारी न देकर उपभोक्ताओं को मूर्ख बनाने का प्रयत्न किया गया है या फिर झूठे वादे किए गए हैं, तो कहीं न कहीं इन विज्ञापनों के प्रस्तुतकर्ता समाज को धोखा दे रहे हैं और इनके घातक परिणाम हो सकते हैं। विशेष रूप से छोटे बच्चों की मानसिकता के साथ खिलवाड़ कर उन्हें अपने जाल में फँसाना बहुत ही अनैतिक है। प्रस्तुतकर्ताओं को एक मर्यादा में रह कर ही इन विज्ञापनों का निर्माण करना चाहिए। विज्ञापनों का समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, अत: इनका प्रयोग समाज की भलाई के रूप में किया जाना चाहिए ना कि स्वयं के निजी लाभ के लिए। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) आकृति पूर्ण कीजिए। **2**

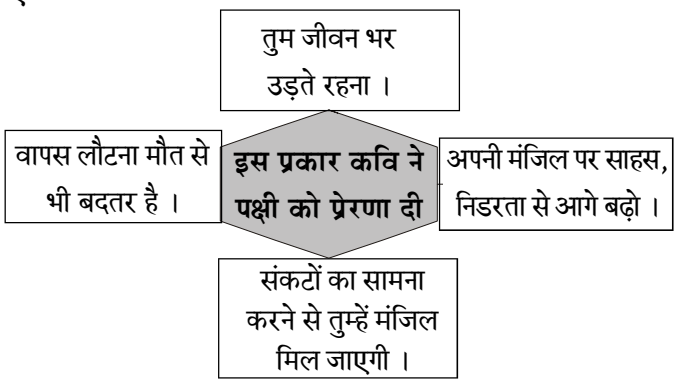

2) i) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) आशावाद (2) साहस

ii) **कृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

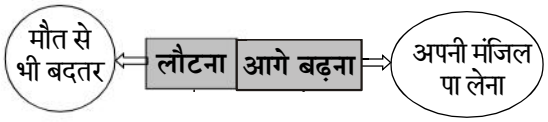

3) i) (1) मौत से भी बदतर होना ½

(2) मनुष्य ½

ii) **विलोम शब्द लिखिए ।**

(1) जीवन × मृत्यु ½

(2) पीछे × आगे ½

4) कवि खग के माध्यम से मानव को सदैव चलते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि पक्षी से निर्भीकता, साहस, हिम्मत के साथ जीवन भर उड़ने को कह रहे हैं। कवि पक्षी से कह रहे हैं कि तू अगर उड़ते-उड़ते अपना रास्ता भूल जाए या तेरे कमज़ोर पंखों की गति कम हो जाए, तब भी तू थककर, डरकर पीछे वापस मत लौटना। तुम आत्मनिर्भर होकर उड़ते रहो। तुम्हारा लौटना मौत से भी बदतर होगा, अत: अपनी मंजिल पर साहस के साथ आगे बढ़ते रहो। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

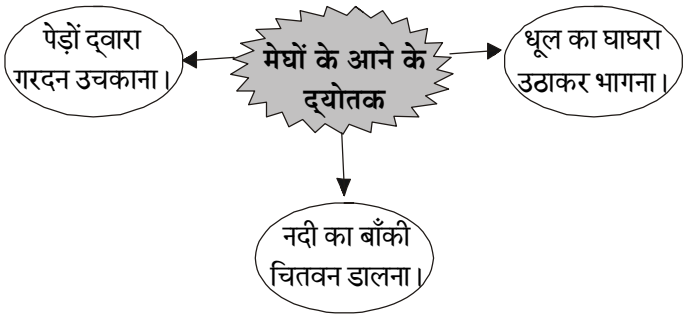

	ii) **समझकर लिखिए।**	1
	धूल का घाघरा उठाकर भागना यानी कि → आँधी के समय धूलभरी हवा का गोल - गोल होकर ऊपर उठना	
2)	i) (1) धूल कैसे भागी ?	½
	(2) कौन झुककर झाँकने लगे ?	½
	ii) **समझकर लिखिए।**	
	(1) मेघों का आगमन हुआ इसलिए नदी ठिठकी।	½
	(2) 'बाँकी चितवन' का अर्थ है - 'सौंदर्यभरी तिरछी नजर'	½
3)	i) **शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए।**	
	(1) नदी - स्त्रीलिंग	½
	(2) पेड़ - पुल्लिंग	½
	ii) **मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द लिखिए।**	
	(1) घूघट - घूँघट	½
	(2) आधी - आँधी	½
4)	तेज़ हवा के झोंकों से पेड़ अपनी गरदन उचका कर झाँकने लगे हैं, जैसे कि वह बादलों को निहार रहे हैं । धूलभरी आँधी ऐसे चल रही है, जैसे अपना घाघरा उठा कर भाग रही हो । हवा के तेज झोंकों से नदी का पानी रुक - सा गया है । नदी तिरछी नजरों से बादलों को देख रही है, जैसे उसका घूँघट ही सरक गया हो । इस प्रकार बादल आकाश में सज - सँवर कर आए हैं ।	2

विभाग - 3 - पूरक पठन

उ.3. पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **संजाल पूर्ण कीजिए ।** **2**

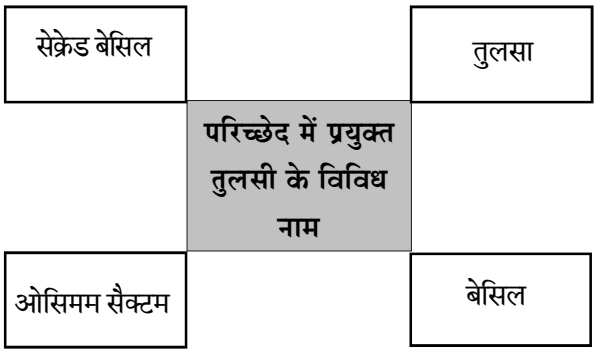

2) वन औषधि ऐसी वनस्पतियों को कहते हैं जो स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के लिए उपयोगी हों। हमारे जीवन में वन औषधियों का विशेष महत्व है। वन औषधियाँ भारत की परम्परागत चिकित्सा पद्धति रही हैं। बीमारियों से बचने के लिए हम प्राचीनकाल से इनका प्रयोग करते आ रहे हैं। नीम, तुलसी, ऐलोवेरा आदि का प्रयोग वन औषधियों के रूप में विशेष रूप से किया जाता है। वर्तमान में वन औषधियों से चिकित्सा करने की पद्धति में प्रगति आई है। हमारे देश में कई ऐसी संस्थाएँ हैं जो वनौषधियों का प्रचार-प्रसार बड़ी तेजी से कर रही हैं। आए दिन वन औषधियों से बने हुए प्रोडक्ट बाजार में आ रहे हैं। **2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
दार्शनिक - स्वामी विवेकानंद दार्शनिक थे ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** **½**
चार - संख्यावाचक विशेषण

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** **1**
उन्हें दिल का दौरा पड़ा ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
लगना - वह झोपड़ी में रहने लगी ।

	ii)	**सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** डाला (डालना) सहायक क्रिया	½
4)		**प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **क्रिया** — **प्रथम प्रेरणार्थक** — **द्‌वितीय प्रेरणार्थक** नाचना — नचाना — नचवाना	**1**
5)	i)	**अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **कुछ** - वह कुछ बोल रहा था ।	**1**
	ii)	**अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** **वाह ! वाह !** - विस्मयादिबोधक अव्यय	**1**
6)		**कालपरिवर्तन कीजिए ।** राजकुमार ने हिरन का शिकार किया । राजकुमार हिरन का शिकार करेगा ।	**2**
7)	i)	**मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **चंपत होना -** गायब होना **वाक्य :-** पुलिस को देखकर अपराधी **चंपत हो गया** ।	**1**
	ii)	**अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** मनुष्य को हमेशा **तौलकर बोलना चाहिए ।**	**1**
		विभाग - 5 - रचना	
उ.5.		**परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	
1)		**निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।** सुंदर शर्मा 15 - अ, शिवपुरी, नासिक। दिनांक - 5 मार्च, 2017 सेवा में, श्रीमान प्रधानाध्यापक जी, तिलक विद्‌यालय, इंद्रापथ, नासिक।	**5**

विषय : तीन दिनों की छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं सुंदर शर्मा, कक्षा दसवीं 'अ' में पढ़नेवाला छात्र हूँ । मेरा अनुक्रमांक 20 है । हमारे कक्षा अध्यापक श्री आर.पी.सिंह जी हैं ।

मेरी छोटी बहन पिछले कई दिनों से बीमार है । वह इस समय अस्पताल में भर्ती है । उसे अनिद्रा, रक्तचाप जैसी बीमारियों ने घेर रखा है । वह चल-फिर नहीं सकती है। पिताजी जरूरी काम से नगर के बाहर गए हैं । सोनू की देखभाल करने के लिए घर पर कोई नहीं है। इसलिए मुझे तीन दिन की छुट्टी की जरूरत है ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि मुझे दिनांक 5 मार्च, 2017 से 7 मार्च, 2017 तक तीन दिन की छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें। इन तीन दिनों में पढ़ाई का जो नुकसान होगा, उसे मैं पूरा कर लूँगा ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी छात्र,
सुंदर शर्मा ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
तिलक विद्यालय,
इंद्रापथ,
नासिक ।

प्रेषक,
सुंदर शर्मा,
15 अ, शिवपुरी,
नासिक ।

अथवा

रमेश पटेल
50, रामपुर,
नासिक - 456005
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान उपअभियंता जी,
महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडल,
नासिक - 456005

विषय : बिजली के बिल के अधिक आने के संबंध में शिकायत पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडल की बिजली का उपयोग वर्षों से कर रहा हूँ। मेरा उपभोक्ता क्रमांक 101625 है।

बड़े दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि फरवरी, 2017 का मेरा बिजली का बिल अनुमान से अधिक आया है। बिजली का उपयोग हमेशा की तरह ही हो रहा है फिर बिल इतना अधिक क्यों आया है ? मेरे घर में न तो फ्रिज है और न ही वॉशिंग मशीन। कपड़े भी बाहर से प्रेस करवाते हैं। अनावश्यक लाइट और पंखे का भी प्रयोग नहीं किया जाता, फिर भी इस महीने (फरवरी) का बिल पिछले महीने (जनवरी) के बिल से दो गुना ज्यादा आया है। यह चिंता का विषय है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि इस विषय पर ध्यान दें और उचित कार्यवाही करें । इस पत्र के साथ 'फरवरी' महीने की और पिछले पाँच बिलों की झेरॉक्स प्रतियाँ संलग्न हैं।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
रमेश पटेल ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान उपअभियंता जी,
महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडल,
नासिक - 456005

प्रेषक,
रमेश पटेल,
50, रामपुर,
नासिक - 456005.

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । 5

'लालच का फल'

एक बहुत दुखी और कंगाल भिखारी था । वह 'लक्ष्मी माँ, लक्ष्मी माँ' बोलता और धन पाने के लिए उनसे प्रार्थना करता रहता था । एक दिन लक्ष्मीजी उस पर प्रसन्न होकर उसके सामने प्रकट हुईं । लक्ष्मीजी ने उस भिखारी से कहा, ''मैं तुम पर प्रसन्न हूँ । तुम कोई भी वरदान माँग सकते हो ।''

भिखारी ने लक्ष्मीजी से सोने की मुहरें माँगी। लक्ष्मीजी ने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हें सोने की मुहरें दूँगी, पर एक शर्त है । जो मुहरें जमीन पर गिरेंगी, वे मिट्टी बन जाएँगी ।''

भिखारी ने लक्ष्मीजी के सामने अपनी फटी-पुरानी झोली फैलाई। लक्ष्मीजी ने कुछ मुहरें झोलीं में डालीं और पूछा, 'बस ?' भिखारी ने कहा, ''नहीं माँ, कुछ और दीजिए ।'' इस प्रकार वह लालच में पड़कर अधिक से अधिक मुहरें माँगता रहा । लक्ष्मी माँ उसकी झोली में मुहरें डालती रहीं ।

भिखारी की पुरानी थैली भर गई और मुहरों का वजन सह न सकी । वह एकदम से फट गई और सारी मुहरें जमीन पर बिखर गईं । शर्त के अनुसार वे सब मुहरें मिट्टी बन गईं । भिखारी बहुत पछताया । उसने लक्ष्मी माता से कुछ कहना चाहा, परंतु तब तक वे अदृश्य हो चुकी थीं ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि लोभ मनुष्य का शत्रु है। अधिक लोभ नहीं करना चाहिए ।

3) **निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके ।** **5**

(1) कौन-कौन-से खेलों की राष्ट्रीय टीम हैं ?
(2) कौन-कौन-से नृत्य देश में लोकप्रिय हैं ?
(3) भारत के सभी प्रांत किसके अधीन हैं ?
(4) भारत देश में कितने संविधान, कानून, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत हैं ?
(5) सभी प्रांतों के सैनिक किस सेना में हैं ?

उ.**6.** **1) विज्ञापन लेखन । (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

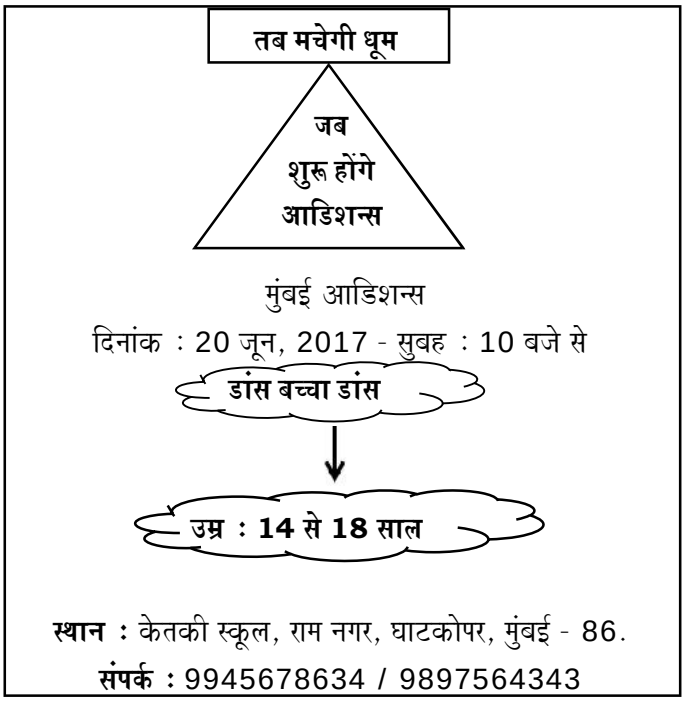

2) **स्वमत : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

यातायात की समस्या सभी के लिए परेशानी का कारण बन चुकी है । सभी इस समस्या से तंग आ गए हैं । आज अन्य मोटर-वाहनों के साथ मोटरसाइकिलों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि हर दिन यातायात के समय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । यातायात के नियमों का पालन नहीं हो रहा है । आज सड़कों पर गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ दिखाई दे रही हैं। इसी कारण आज का आम आदमी घूमने जाने के लिए भी कतरा रहा है । सरकार की ओर से यातायात की समस्या को हल करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं किंतु गाड़ियों की संख्या में आए दिन वृद्धि हो रही है । उनसे निकलनेवाला धुआँ वायु-प्रदूषण फैलाता है । हमें इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना चाहिए ।

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । (60 से 80 शब्दों में) **5**

1) **वृक्ष लगाओ, देश बचाओ**

वृक्ष हमारे सच्चे साथी,
हमको सबकुछ दे जाते हैं,
पर हम तो हैं बड़े स्वार्थी,
इनको काट गिराते हैं ।"

प्रकृति जीवनदायिनी है । उसी के द्वारा बनाए गए स्वस्थ वातावरण में साँस लेकर हम जी रहे हैं । प्रकृति में वृक्षों और वनों का बहुत महत्त्व है । वृक्ष प्रकृति के पूरक हैं । वृक्ष धरती के हाथ हैं। धरती माता अपने इन्हीं वृक्षरूपी हाथों के द्वारा अपने मानवपुत्रों को जल, वायु तथा सुंदर व शुद्ध वातावरण प्रदान करती है ।

वृक्ष प्रकृति द्वारा मनुष्यों को दिया गया वह बहुमूल्य उपहार है, जिसके लिए मनुष्य उसका सदा ऋणी रहेगा । वृक्ष से हमें ऐसी कई चीजें मिलती हैं, जिनका हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं । वृक्ष से लकड़ी, कोयला, गोंद तथा कागज आदि चीजें प्राप्त होती हैं । वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु की तेज धूप में छाया देते हैं ।

वृक्ष अत्यधिक मात्रा में ऑक्सिजन छोड़ते हैं । इसी ऑक्सिजन से हमारा जीवन चलता है । प्राण-वायु के स्त्रोत वृक्ष ही हैं । बढ़ती आबादी व शहरीकरण के इस युग में वृक्षों की उपयोगिता और भी बढ़ गई है । निरंतर बढ़ रहे प्रदूषण के कारण आज हमारी औसत आयु घटती जा रही है । हम रोज नई-नई बीमारियों के चंगुल में फँसते जा रहे हैं । वृक्ष ही इसका एकमात्र विकल्प हैं, जो बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण कर हमें इन बीमारियों से बचा सकते हैं ।

वृक्ष जल के वेग को रोककर बाढ़-नियंत्रण करते हैं । वन-भूमि को मरुस्थल बनने से रोकते हैं । वे नमी को सोखकर धरती की निचली परत तक पहुँचा देते हैं । जिससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है । वृक्षों के अभाव में धरती के ऊसर बनने का खतरा बना रहता है तथा साथ ही साथ प्रकृति का संतुलन भी बिगड़ने का खतरा बना रहता है । वृक्षों के कारण वन तथा वन के कारण वन्य पशु-पक्षियों का जीवन सुरक्षित रहता है । वृक्षों के कारण ही विभिन्न ऋतुओं का चक्र भी यथासमय चलता रहता है । चाहे कश्मीर की वादियाँ हों या शिमला की पहाड़ियाँ, ये सभी तरह-तरह के वृक्षों के कारण ही सुशोभित हैं । वृक्षों पर ही प्राकृतिक सौंदर्य निर्भर है । प्रात:काल सूर्योदय के समय वृक्षों पर तरह तरह के पक्षियों का चहचहाना हमें धरती पर स्वर्ग की अनुभूति कराता है । यदि वृक्ष न हों तो संपूर्ण सृष्टि का विनाश निश्चित है । प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा । हमें न तो शुद्ध हवा मिलेगी और न ही स्वच्छ जल । रंगबिरंगे मीठे-मीठे फलों से हम वंचित हो जाएँगे । चारों तरफ मरुस्थल का दृश्य होगा । पशु-पक्षियों का आशियाना उजड़ जाएगा ।

जिस प्रकार हम अपने परिवार को प्रेम करते हैं, उनकी खुशिया को महत्व देते हैं, उसी प्रकार हमें अपने देशरूपी परिवार के प्रति भी आत्मीयता रखनी चाहिए । वृक्ष हमारे देश व समाज की रक्षा करते हैं। वृक्ष हमारी प्राकृतिक संपदा हैं । वृक्षों को काटकर हम अपनी जीवनडोर काटते हैं । अपने देश की बहुमूल्य संपदा नष्ट करते हैं । यदि हम अपने देश की भलाई चाहते हैं तथा अपने आनेवाली पीढ़ी के प्रति चिंतित हैं और हमारे मन में उनके भविष्य के प्रति दूरदर्शिता है तो हमें वृक्षरूपी धन का संरक्षण करना चाहिए । वरना प्रकृति का विनाशक रूप हमारे देश को तबाह कर देगा । लगातार हो रही प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से प्रकृति हमें

सचेत करने के लिए मानों यह चेतावनी दे रही है । –

ओ पापी मानव ! क्यों पाप किए जाता है,
जिस आँचल ने तुझको पाला, उसे फाड़ता जाता है,
नहीं अभी यदि तू मानेगा, तो पीछे पछताएगा,
अपने ही हाथों से तू, अपनी चिता जलाएगा ।"

प्रकृति की यह चेतावनी हमें जल्द से जल्द समझ लेनी चाहिए तथा प्रकृति के आँचलरूपी वृक्ष की रक्षा कर हमें नित नए-नए वृक्ष लगाने चाहिए ।

2) **एक अकाल पीड़ित की आत्मकथा**

''का बरखा जब कृषि सुखानी ।
समय चूकि पुनि का पछतानी ।।''

सौंदर्य, प्रेम तथा संवेदनाओं से भरी प्रकृति कभी-कभी रौद्र रूप भी धारण कर लेती है । उसका क्रोध कोई भी रूप ले लेता है । अकाल प्रकृति के क्रोध का एक अति भयानक, हृदय विदारक, रूह कँपा देनेवाला रूप है ।

साथियों, आप समझ गए होंगे कि मैं कौन हूँ । जी हाँ, मैं एक अकाल पीड़ित हूँ, आप मेरी दर्दभरी व्यथा सुनना पसंद करेंगे ? ठीक है सुनिए, भारत जैसे कृषिप्रधान देश के लिए अकाल किसी भयंकर अभिशाप से कम नहीं। मेरे परिवार में मैं, मेरी पत्नी तथा दो बच्चे व मेरी बूढ़ी माँ थी ।

मेरा गाँव खुशहाल था । सब एक-दूसरे की मदद करते थे । लोगों का एक-दूसरे के घर आना-जाना, लेन-देन होता था किंतु किसी को क्या पता था कि खुशहाल गाँव पर अकाल का ग्रहण लग चुका है । सब लोग भीषण गर्मी में तपते हुए मेघराज का बेसब्री से इंतजार करने लगे । आसमान में काले बादल आए परंतु हल्की बूँदा-बाँदी के अलावा कुछ भी हाथ न लगा ।

दिन पर दिन और महीने के महीने गुजर गए किंतु बरखा रानी हम सबकी दुश्मन बनी हुई थीं । पूरा वर्ष इंतजार में बीत गया । किसानों के घरों में अन्न की कमी पड़ने लगी और महँगाई आसमान छूने लगी। लोग किसी तरह से एक-एक दिन मुश्किल से काट रहे थे । उम्मीद थी कि इस साल बरखा रानी के आते ही सारे दु:ख भाग जाएँगे परंतु विधाता को तो कुछ और ही मंजूर था ।

दूसरा साल आया । लोग भूख-प्यास से तड़पने लगे । इस वर्ष भी मेघराज ने धोखा दिया । बच्चे बूढ़े सब दाने-दाने के मोहताज हो गए । गायभैंस, बैल को भूख से बेहाल देखते ही आँखें बरसने लगती थीं, वे सिर्फ कंकाल बनकर रह गए थे ।

अचानक गर्मी बढ़ी। पूरे गाँव में महामारी, हैजा फैल गया । लोगों के घरों में न अनाज का टुकड़ा बचा था और न पानी । एक - एक बर्तन पेट की आग बुझाने में बिक गया, फिर भी पेट की आग जलती रही । लोग मंदिरों में, मस्जिदों में पूजा, प्रार्थना दुआ माँगते रह गए किंतु ऊपरवाले को दया नहीं आई । घर का घर महामारी की चपेट में आता गया और लोग मच्छर, मक्खी की तरह मरने लगे, साथ में जानवरों की भी वही हालत होती गई ।

होनी को भला कौन टाल सकता है ? आखिर एक दिन मेरा घर भी महामारी के चंगुल में आ गया । मैं चीखता-चिल्लाता रहा किंतु मेरी मदद कौन करता ? सबके सामने तो एक ही समस्या थी । मेरी आँखों के सामने मेरी माँ, पत्नी तथा दोनों मासूम बच्चे चीखते-बिलखते मौत के मुँह में समा गए ।

चारों तरफ महामारी का तांडव बढ़ता जा रहा था । गाँव के गाँव मौत के मुँह में समाते जा रहे थे । जिसे देखकर सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था प्रारंभ की । जगह-जगह पानी का टैंकर, खाने का पैकेट तथा डॉक्टर के द्वारा लोगों का इलाज व दवाइयों का वितरण किया जाने लगा । चंद दिनों में महामारी पर नियंत्रण कर लिया गया तथा सरकार के द्वारा कुआँ, तालाब, नलकूप आदि की खुदाई की जाने लगी। 'मैं अभागा किस्मत का मारा' न जाने किन कर्मों का फल मुझे भुगतना पड़ा । जो अपने परिवार के साथ न जी सका, न मर सका । ऐसे जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी थी ।

''समझौता गमों से कर लो ।
जिंदगी में गम भी मिलते हैं ।''

❖❖❖❖